अनमोल तोहफ़ा

मुश्ताक़ मोमिन

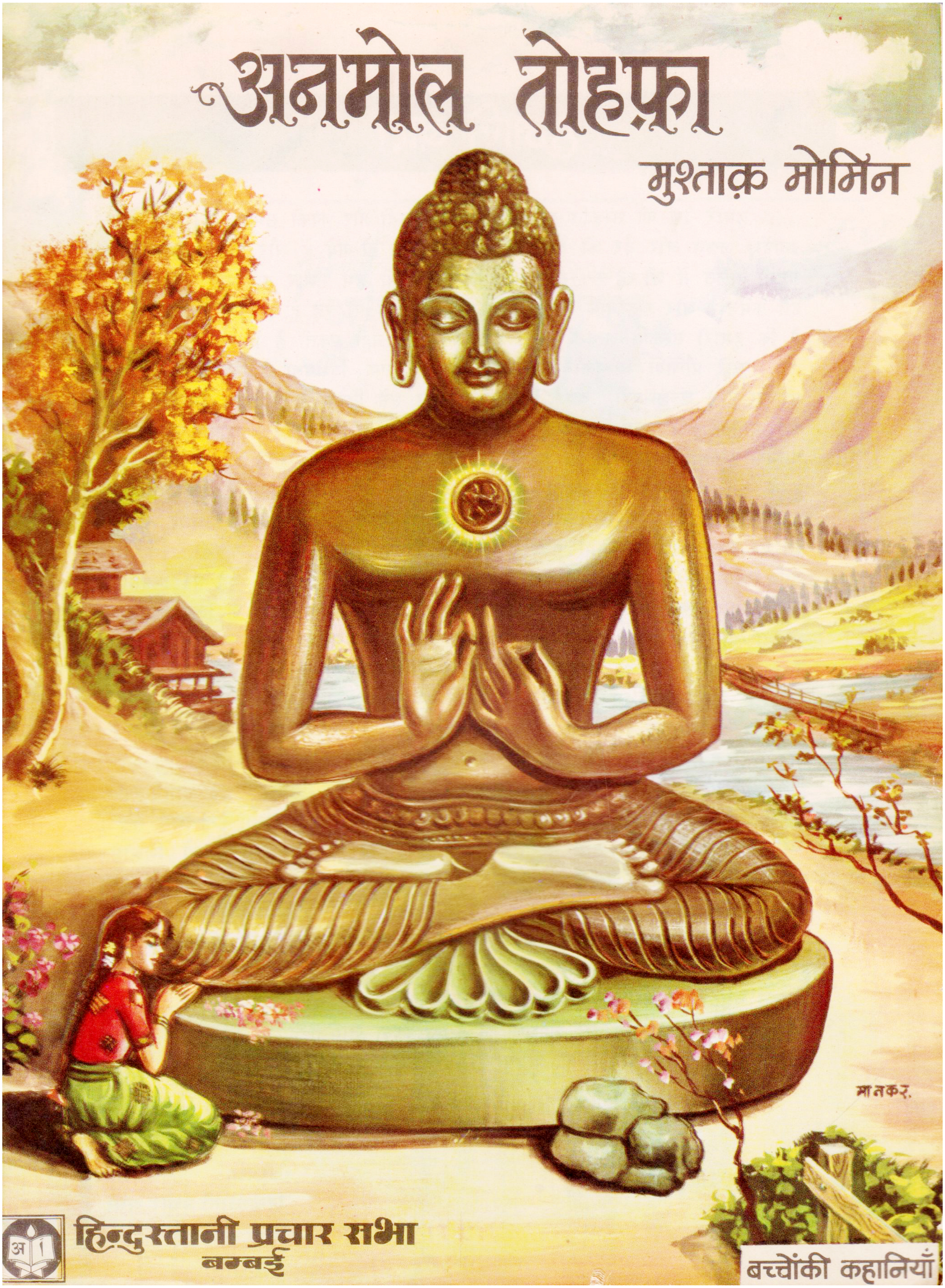

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

बच्चोंकी कहानियाँ

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और ख़तरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे-बडे संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

अनमोल तोहफ़ा

मुश्ताक मोमिन

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८१

कार :
ल. मानकर

मूल्य :
दो रुपये

मुद्रक :
अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डाक
कोलाबा, बम्बई ४०० ००५

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई ४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०
मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ -२२६००१
२८५/जे, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट,
कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५००००१
३, गांधी सागर ईस्ट,
नागपुर-४४०००२
खजांची रोड, पटना-८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८

१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाउस,
१०३/५, बालचन्द हीराचन्द मार्ग,
बम्बई ४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग,
रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००९
६३१-७ महात्मा गांधी रोड,
एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

अनमोल तोहफा

वह एक बहुत सुन्दर और अच्छी लड़की थी। उसके बाल रेशम से चमकीले और नरम थे। उसकी काली-काली आंखें रोशन और चमकदार थीं। उसका रंग गुलाबी था और जितनी भोली और प्यारी वह दिखाई देती थी, उससे कहीं ज्यादा प्यारी थीं उसकी बातें! जब वह बात करती तो ऐसा जान पड़ता मानो फूल झड़ रहे हों।

नाम था उसका झरना!

झरना बिना मां-बाप की, एक बेसहारा लड़की थी। कुछ वर्ष पहले उसके मां-बाप एक दुर्घटना के शिकार हो गये थे और अब इस भरी दुनिया में वह अकेली थी।

मां-बाप के बिना उसे यह दुनिया बिलकुल अच्छी नहीं लगती थी। कभी-कभी वह बहुत उदास हो जाती और रोने लगती। फिर उसे ऐसा जान पड़ता, जैसे उसकी मां उसके पास बैठी है और बड़े प्यार से उसे समझा रही है, " मुन्नी, मेरी प्यारी बेटी, तू रोती क्यों है? देख, अपने दुःखों से घबरा नहीं बल्कि दुखों को दीपक की तरह रोशन कर ले और उनकी रोशनी में आगे के लिए रास्ता ढूंढ़।"

मां के ये बोल सुनकर झरना में फिर नया उत्साह पैदा हो जाता। अपने फ्राक से आंसू पोंछकर वह फिर काम में लग जाती।

उसकी मां बहुत प्यारी थी और उसके बापू बहुत अच्छे थे। कामकाज से छुटकारा पाकर वह उन दिनों की याद करने लगती, जो उसने अपने मां-बाप के साथ बिताये थे।

उसके बापू पत्थरों से मूर्तियां बनाते थे और वह दिन भर चारों ओर खेला करती थी। मूर्तियां बनाते-बनाते वे उससे बातें भी करते जाते, "यह गौतम बुद्ध की मूर्ति है, जो ज्ञान-ध्यान में लगे हैं।...

ये तीन मूर्तियां देख रही है न झरना, यह बुड्ढा आदमी, जिसकी कमर कमान की तरह झुकी हुई है, यह अरथी और भयानक रोग का शिकार यह आदमी !

"इन तीनों को मैंने एक साथ बनाया है। इन लोगों की दशा देखकर ही राजकुमार सिद्धार्थ का मन इस दुनिया से उचाट हो गया था और एक ही सवाल उनके मन में गूंजने लगा—संसार में आदमी इतना दुखी क्यों है ?...... और यह मूर्ति जो मैं अब बनाने जा रहा हूं बेटी, यह भी गौतम बुद्ध की है, जब वे केवल उन्तीस साल के थे और इस उम्र में वे महल के आराम त्यागकर, निर्वाण की खोज में जंगल में निकल गये थे......।"

उसे अपने बापू की एक-एक बात याद थी। उन्होंने जिंदगी में कभी किसी का दिल नहीं दुखाया, कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया। महात्मा गौतम बुद्ध की शिक्षा को वे कला के रूप में लोगों तक पहुंचाते रहे।

इसका असर झरना पर भी पड़ा। वह बड़ी आसानी से भीख मांगकर, जीवन बिता सकती थी, मगर मां-बाप ने उसे आदमी के बड़प्पन और मेहनत पर भरोसा करना सिखाया था। इसीलिए उसने एक महल जैसी कोठी में नौकरी कर ली और छोटी-सी आयु में ही नौकरानी बन गयी। दिन भर वह घर की सफाई करती, बच्चों को स्कूल ले जाती, स्कूल से घर वापस लाती।

रात में थकान से उसे नींद आने लगती तो कोठी के सारे बच्चे उसे घेर लेते और हठ करते, "कहानी सुनाओ दीदी ! प्यारी दीदी, कहानी सुनाओ न!" और फिर झरना लैंप की रोशनी में बच्चों को जातक की कहानियां सुनाती। सफेद हाथी की कहानी, जिसने जीवन भर अपनी बूढ़ी और अन्धी मां की सेवा की, कभी कहानी सुनहरे हंस की, जो अपने घरवालों को रोजाना सोने का एक पंख देता कि वे उसे बेंचकर अपना गुजारा कर सकें, और कभी कोयल और शिकारी की कहानी कि किस तरह जबतक कोयलें मेलजोल से रहीं, शिकारी उन्हें पकड़ न सका और ज्यों ही उनमें फूट पड़ी, शिकारी ने उन्हें जाल में फंसा लिया।

इन कहानियों में गौतम बुद्ध खुद मौजूद होते थे, कभी बड़े पात्र के रूप में

कभी छोटे पात्र के रूप में। और कभी सिर्फ देखनेवाले के रूप में।

ये कहानियां राजकुमार सिद्धार्थ की थीं। सिद्धार्थ, जो गौतम बुद्ध का बचपन का नाम था।

ये कहानियां झरना ने अपनी मां से सीखी थीं।

इन कहानियों में जीवन की सच्चाई, भोलापन और पवित्रता का पाठ था।

कहानी सुनने के बाद जब बच्चे सो जाते तब झरना अपने बारे में सोचना शुरू करती: "कोई तो नहीं है जो मुझे प्यार करे, मुझे अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाये। मैं किससे मांगू ? किससे गुड़िया के लिए हठ करूं ? रंग-बिरंगे गुब्बारे, खट्टी-मीठी गोलियां और मिठाई मुझे कौन लाकर देगा ?......" और यह सब सोचते-सोचते वह उदास हो जाती।

अगर झरना चाहती तो इतने बड़े घर से पैसे चोरी करके, अपनी इच्छाएं पूरी कर सकती थी। मगर उसे उसके मां-बाप ने कुछ और ही सिखाया था।

इसीलिए उसकी उदासी थोड़े समय के लिए होती।

"अगर तुम्हारे व्यवहार, तुम्हारी बातों से किसी को खुशी मिले तो यह बड़ी बात है बेटी !," मां की कही हुई यह बात उसके अंधेरे, कठिन जीवन में जुगनू की तरह जगमगाती रहती।

कभी-कभी रात में वह बड़े प्यारे-प्यारे सपने देखती। कभी देखती कि वह पत्थर से बने एक बहुत बड़े कमरे में खड़ी है और उसके सामने खड़े हैं सिद्धार्थ ! सिर पर ताज, गले में मोतियों की माला, हाथ में कमल का फूल, होठों पर एक दुख भरी मुस्कराहट है और आंखों में आंसू। इससे पहले कि वह उनसे बातें करे, उसकी आंख खुल जाती और वह देखती कि सुबह हो चुकी है, चारों ओर उजाला फैल गया है और पंछी गीत गा रहे हैं।

एक दिन सुबह जब वह मीठे पानी के झरने से, सुराही में पानी भर कर ला रही थी, उसे चमकती हुई एक चीज दिखाई दी। उसने अपनी सुराही घास पर रख दी और कांपते हाथों से उस चीज को उठाया।

वह तांबे का एक गोल सिक्का था। मारे खुशी के झरना की आंखों में आंसू आ गये।

वैसे तो वह मामूली तांबे का एक

" कभी देखती कि वह पत्थर से बने एक बहुत बड़े कमरे में खड़ी है और उसके सामने खड़े हैं सिद्धार्थ।"

था, मगर झरना के लिए एक बहुत खजाना था।

रात को सोते समय वह फ्राक की से तांबे का सिक्का निकालती और तों के महल बनाना शुरू कर देती: ासे मैं एक सुन्दर, नीली आंखोंवाली या मोल लूंगी।...... नहीं, मैं तो एक र खिलौना लूंगी। ......ना, भई ना, ो मैं ढेर सी मिठाइयां खरीदूंगी और बच्चों को इकट्ठा कर सालगिरह ऊंगी। लाल-लाल फूल सजाए जायेंगे, कते हुए गुब्बारे लगेंगे...... हाय, ना मजा आयेगा!" वह भोलेपन में ने-आपसे बातें करती और सोचते-ाते सो जाती।

कई दिन बीत गये, मगर झरना इस का फैसला न कर सकी कि इस पैसे से क्या खरीदे। खिलौने, गुड़िया या ाई? भोली लड़की को यह पता न कि इस मामूली सिक्के से कुछ भी खरीदा जा सकता।

एक दिन झरना ने देखा कि गांव में चहल-पहल है। धूम-धाम है और के लोग उस घाटी की ओर जा रहे जहां पहाड़ों को काटकर महात्मा बुद्ध मूर्ति बनाई जा रही थी।

सभी के साथ झरना भी वहां जा पहुंची। पत्थर के बड़े चबूतरे पर बहुत सारे लोग केसरी रंग के कपड़े पहने खड़े थे।

"ये कौन लोग हैं?," कुछ बच्चों ने झरना से पूछा।

"अरे, तुम्हें नहीं मालूम। ये भिक्षु हैं भिक्षु! ये गौतम बुद्ध की शिक्षा को घर-घर पहुंचाते हैं और अज्ञान के अंधेरे को दूर करते हैं!"

झरना सब जानती थी।

एक भिक्षु ने कहना शुरू किया "राजकुमार सिद्धार्थ, जिसने महल के आराम त्यागकर जंगल की राह ली और फिर कड़ी तपस्या के बाद जिन्हें एक दिन पीपल के पेड़ के नीचे निर्वाण मिला जिन्होंने बुद्धधर्म की नींव डाली, और हमें ऐसी बातें बताई, जिनमें शांति का संदेश है, सच्चाई, पवित्रता और भोलापन है जिसे अपनाने के बाद आदमी एक-दूसरे से प्रेम करने लगता है, उनकी याद हम करें।

"हम देखते हैं कि लोग उनकी शिक्षा को भूलते जा रहे हैं। आज जरूरत इस बात की है कि हम उनके बताये रास्ते पर चलें, उनके संदेश को घर-घर पहुंचायें।

“ हम यह भी चाहते हैं कि इस गांव ःात्मा बुद्ध की एक मूर्ति भी बने, जो के हर कोने से दिखायी पड़े। यह मूर्ति सच्चाई और शांति की याद दिलाती । हमें आपकी मदद की जरूरत है । नापसे दान देने की विनती करते हैं ताकि जल्द ही महात्मा गौतम बुद्ध की मूर्ति पूरी हो सके...,” भिक्षु अपनी बात आगे कहते इससे पहले ही दान देना शुरू हो गया । जरा-सी देर में सोने-चांदी के जेवर और सिक्कों का ढेर लग गया ।

“ मैं इस पैसे से कुछ नहीं खरीदूंगी,

कुछ नहीं, बल्कि इस अच्छे काम के लिए मैं इसे दान करूंगी," झरना ने अपने आप से कहा।

जेब से सिक्का निकाला और भीड़ में धक्के खाती आगे बढ़ी। बड़ी कठिनाई से वह उस चबूतरे तक पहुंची, जहां भिक्षु खड़े थे।

"नन्हीं बेटी, तू क्या लेकर आई है?," एक भिक्षु ने झरना की ओर ध्यान दिया।

झरना ने आगे हाथ बढ़ाकर अपनी मुट्ठी खोल दी। पसीने से पसीजी हुई हथेली पर तांबे का एक सिक्का चमक रहा था।

"यह गन्दा, मामूली-सा सिक्का? इसे लेकर मैं क्या करूंगा?," भिक्षु ने उसके हाथ को झटक दिया और दूसरे आदमी की ओर पलट पड़ा जो चांदी के ढेर सारे सिक्के लेकर आया था।

झरना की आंखों में आंसू आ गये। कांपते हाथों से उसने अपना सिक्का उठाया और भागती हुई भीड़ से बाहर निकल आई।

वह रो रही थी।

इस घटना को कई दिन हो गये, मगर आंसू थे कि झरना की आंखों से रुकने का नाम न लेते थे।

"क्यों ठुकराया? मुझ गरीब के दान को क्यों ठुकराया?," वह सोचती जाती और रोती जाती। रोती जाती और सोचती जाती।

दान में इकठ्ठा की गयी चीजों को पिघलाया गया और पिघलाने के बाद सांचे में ढ़ालकर मूर्ति तैयार की गयी।

मगर यह क्या? मूर्ति की छाती के पास एक गहरी दरार पड़ी हुई थी।

बनानेवाले ने सोचा, "शायद पिघलाने में कुछ कसर रह गयी हो!"

लेकिन दूसरी बार भी दरार वैसी ही रही। मूर्ति बहुत सुन्दर बनी थी मगर छाती के पास से फटी हुई। बार-बार कोशिश की गई, बार-बार धातु को पिघलाकर सांचे में ढाला गया। मूर्ति सुंदर, बहुत सुन्दर बनती, मुख पर वही शांति, पवित्रता होती। मगर छाती के पास की गहरी दरार नहीं भरती।

कई बार की कोशिशों के बाद, भिक्षुओं के गुरू ने सारे भिक्षुओं को बुलाया और कहा:

"यह बड़े अचरज की बात है। पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ। आप

" मगर यह क्या ? मूर्ति की छाती के पास एक गहरी दरार पड़ी हुई थी ।"

ागों ने सारे तोहफे और दान, प्रेम और ानदारी से वसूल किये हैं ना ?

" आपको मालूम होना चाहिए कि ा उस महान पुरुष की मूर्ति बना रहे जिसने जीवन भर लोगों को शांति, प्रेम र ईमानदारी का पाठ पढ़ाया। जिसने भी किसी का मन नहीं दुखाया। अच्छी ह सोचकर बताइये, किसी से कोई ल-चूक तो नहीं हुई ?"

एक भिक्षु आगे बढ़ा और बोला, मेरे पास एक छोटी-सी लड़की आई थी ूर। उसके पास तांबे का एक बहुत मामूली, गंदा सिक्का था। वह वही क्का दान करना चाहती थी, लेकिन ो उस मामूली सिक्के को स्वीकार नहीं या। कहीं इसके कारण तो......"

" तुमने यह क्या किया नादान ?," क्षुओं के गुरु ने अपना सिर पकड़ लिया, तुमने एक गरीब का मन दुखाया, उसकी द्धा को ठेस पहुंचाई। जाओ, तुरंत उस ड़की को ढूंढो। उसका तोहफा सबसे नमोल और सबसे बड़ा है। इसके बिना हमारी शिक्षा और हमारा काम पू नहीं होगा।"

गांव में झरना को ढूंढा गया अ उसे बड़े आदर और सम्मान के स लाया गया। वह खुद अचरज में थी यह क्या मामला है।

सबसे पहले भिक्षुओं के गुरू ने झर से माफी मांगी। उसके नन्हें हाथों चूमा, जो मेहनत-मजदूरी के का खुरदुरे हो गये थे। उसके माथे को चू और बड़े प्यार से उसके तोहफे स्वीकार किया।

मूर्ति फिर से बनाने की तैयारी गयी।

मूर्ति बनकर तैयार हुई। लोगों बड़े अचरज से देखा कि मूर्ति बिलकु साफ-सुथरी, शालीन है। पवित्रता अ शांति बुद्ध के चेहरे पर खेल रही है।

मूर्ति की छाती पर झरना का दि हुआ, देखने में मामूली-सा तांबे सिक्का, अनमोल तोहफा बनकर, हीरे तरह चमक रहा है।

भगवान का प्यारा

गांव के एक किनारे, पता नहीं कितने दिनों से वह मंदिर बना हुआ था। गांव के कितने ही बच्चे मंदिर के सामने खेलते-खेलते जवान हो गये थे, फिर भी मंदिर ज्यों-का-त्यों खड़ा था।

बच्चों को जब से मंदिर की याद है तबसे ही याद है उसके बूढ़े पुजारी की! पुजारी कौन है, कहां से आया किसी को पता नहीं। यहांतक कि उसका नाम भी कोई नहीं जानता था। गांव भर के लोग उसे पुजारी जी कहते थे। पुजारी को भी अपने मंदिर और ईश्वर की पूजा के अलावा दूसरा कोई काम था ही नहीं।

हां, वह मंदिर के बाहर तब जरूर आता, जब गांव में कोई, किसी तकलीफ में पड़ा होता।

भगवान की पूजा और इंसान की मदद—पुजारी के ये दो जीवन-मंत्र थे।

समय बीतता गया और उम्र ने अपना असर दिखाया। पुजारी के बाल बर्फ की तरह सफेद हो गये, आंखें कमजोर हो गयीं, कमर झुक गयी। बुढ़ापा आ गया।

लेकिन उसका दिल अभी भी उत्साह और दया से लबालब भरा था। न वह भगवान की पूजा छोड़ता था और न इंसान

की सेवा ! गांववाले हैरत में पड़ जाते जब देखते कि अपनी लाठी टेकते बूढ़े पुजारी किसी दुखिया की मदद के लिए चले जा रहे हैं। जरा सोचो, हमलोग जो अच्छे-भले जवान दिखते हैं, कभी किसी की मदद के लिए दौड़ते हैं ? कोई मदद चाहता भी है तो हम उससे बच निकलते हैं।

बूढ़ा पुजारी मंदिर में आनेवालों से अकसर एक ही बात कहता था, " खेत जब बंजर हो जाता है तो उसे रेगिस्तान कहते हैं; इंसान जब दूसरों से प्यार करना, उसकी मदद करना छोड़ देता है तब उसे हैवान कहते हैं। ऐ गांववालो, तुम इंसान बनो। दुनिया में इंसानों की बहुत कमी है!"

एक दिन पुजारी दोपहर का खाना खत्म कर, अपने कमजोर हाथों से जूठे बर्तन साफ कर रहा था कि उसके सामने एक आकृति आकर खड़ी हो गयी। पुजारी उसे पहचानता न था।

आकृति बोली, " बाबा, मैं खुदा का भेजा फरिश्ता हूं। मैं उन लोगों को पृथ्वी पर से ले जाने का काम करता हूं जिनका समय पूरा हो गया है। अब तुम भी चलो और खुदा की पनाह में सो जाओ !"

पुजारी की मौत का पैगाम था यह, लेकिन वह जरा भी नहीं घबराया।

अपनी शांत आवाज में बोला, " खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि उसने मुझे याद किया। तुम जरा ठहरो फरिश्ते, मैं हाथ का यह काम निबटाकर तुम्हारे साथ चलता हूं।"

फरिश्ता मुस्कराया और बोला, "ठीक है बाबा, तुम अपना काम पूरा करो। मैं फिर आऊंगा।"

फरिश्ता चला गया और पुजारी फिर अपने कामों में डूब गया।

पता नहीं कितने दिन बीत गये। पुजारी मंदिर के बगीचे में फूल की क्यारियां बना रहा था कि फिर फरिश्ता आकर खड़ा हो गया।

"ओह, आ गये तुम! बड़ी देर लगा दी तुमने! लेकिन कोई बात नहीं, मैं अभी इन क्यारियों को निबटाता हूं और तुम्हारे साथ हो लेता हूं। काम अधूरा छोड़ना तो ठीक नहीं है भाई!"

"तुम्हारी मर्जी," फरिश्ता बोला और गायब हो गया।

पुजारी फिर कामों में डूब गया।

जिन्हें काम में आनंद आता है उनके लिए काम की कमी नहीं होती है।

गांव में जोरों की महामारी फैली। मौत की जैसे एक आंधी चल पड़ी। सेवा और इलाज के अभाव में लोग मरने लगे।

पुजारी मंदिर से निकलकर गांव में आ गया और रात-दिन लोगों की सेवा में जुट गया। खाना-पीना, आराम करना सब कुछ वह भूल गया और साथ ही भूल गया फरिश्ते का आना।

एक रोज वह किसी बीमार की सेवा में लगा हुआ था कि फरिश्ता आ गया।

वह आकर चुपचाप द्वार के निकट खड़ा हो गया और पुजारी को काम करते देखने लगा। पुजारी ने बीमार का बुखार देखा, उसके सर पर ठंडे पानी की पट्टी रखी, दवा खिलायी और उसे कंबल उढ़ाकर जैसे ही चलने को हुआ, उसे द्वार पर खड़ा फरिश्ता दिखायी दिया।

एक भोली हंसी उसके चेहरे पर खेल गयी, "आज तो मैं ऐसे काम में लगा हूं कि तुम भी मुझे ले चलने से इंकार कर दोगे। देखो न, खुदा के ये बेटे कितनी तकलीफ में हैं।

"मैं इनकी सेवा भगवान की प्रार्थना मानकर कर रहा हूं। ऐसे वक्त मुझे यहां से ले चलोगे?"

पुजारी ने जवाब के लिए फरिश्ते की तरफ देखा। लेकिन फरिश्ता वहां था कहां? वह तो जा चुका था।

महामारी से लड़ते-लड़ते पुजारी बुरी तरह थक चुका था। उसके बूढ़े, कमजोर शरीर ने अब साथ देने से इंकार कर दिया था। बीमारी भी काफी हदतक काबू में आ गयी थी।

दिन भर की अथक मेहनत के बाद, अपनी कोठरी में आकर बूढ़ा पुजारी खाट पर लेट गया। "नहीं, अब मैं खाट से उठकर कुछ नहीं कर सकूंगा", उसने सोचा।

उसकी आंखें छत निहार रही थीं, और उसके दिमाग में फरिश्ते का खयाल आ रहा था– अब मेरा काम हो गया। खुदा ने मेरे शरीर में जितनी ताकत दी थी, उतनी मैंने ईश्वर की भक्ति की, इंसान की सेवा की। अब मैं चलना चाहता हूं। फरिश्ता अभी आ जाता तो मैं अभी उसके साथ चल देता। अब मेरा कोई काम बाकी न रहा......,

यह सोचते-सोचते उसकी पलकें मुंदने लगीं, शरीर एकदम शांत-सा हो गया, और उसे लगा कि वह नींद के अतल सागर में डूबता ही जा रहा है...... डूबता ही जा रहा है...... उसकी आंखें पूरी तरह बंद होतीं कि मुस्कराता हुआ वह फरिश्ता सामने आ खड़ा हुआ।

पुजारी का चेहरा खिल उठा, "बहुत समय पर आये मेरे भाई! चलो, मैं एकदम तैयार हूं।

"खुदा भी कितना मेहरबान है! मैंने अभी उसे पुकारा था और अभी उसने तुम्हें भेज दिया। मैं तुम्हारा भी बहुत आभारी हूं फरिश्ते कि तुम मुझे ले चलने आ गये। चलो, अब मैं खुदा की पनाह में सोना चाहता हूं।"

पुजारी चलने के लिए उठने को हुआ कि फरिश्ते ने बड़े प्यार से उसका कंधा छुआ। आगे बढ़कर उसने पुजारी को आहिस्ता-आहिस्ता बिस्तरे पर लिटा दिया, और आदर के साथ बोला, "बाबा, तुम्हें कहीं जाने के लिए उठने की जरूरत नहीं है। खुदा के पास जाने के लिए तो उन्हें चलना पड़ता है जो जीवन में खुदा से बहुत दूर रहते हैं।

"तुम तो जीवन भर भक्ति और सेवा के द्वारा, कदम-दर-कदम ईश्वर की तरफ चलते रहे हो, उसके पास पहुंचते रहे हो। अब तुम्हें कहीं जाना नहीं है। खुदा ने खुद ही आगे बढ़कर तुम्हें अपनी पनाह में ले लिया है।" ●

(कुमार प्रशान्त)

हमारे आगामी प्रकाशन

- कृतज्ञ और कृतघ्न
- भगीरथ
- युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण
- ब्रह्मा का गर्वहरण
- शरणागत वत्सलता
- कहानी एक तूफान की
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- अंगुलिमाल
- प्रभु का प्रकाश
- तीन साधु

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी । इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके । वह भाषा है हिन्दुस्तानी ।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पहली किस्त है । हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी ।

बच्चों की कहानियां

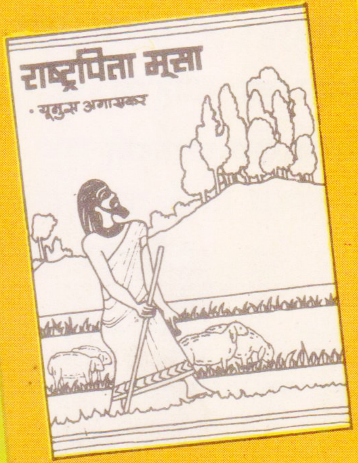

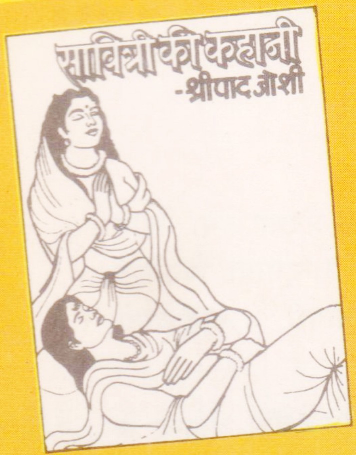

एकमात्र विक्रेता
एस. चांद एंड कंपनी लि.
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली – ११० ०५५